विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग-नवम् विषय-संस्कृत विषय शिक्षक-श्यामउदय सिंह

ता:-२६/०७/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

द्वितीय:पाठ: स्वर्ण काक: लेखक: श्रीपद्मशास्त्री -विश्वकथाशतकम्

#पुरा(प्राचीन समय) कश्मिंश्चित्(किसी) ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत् |तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत् एकदा

माता स्थाल्यां तण्डुलान्निक्षिप्य पुत्रीमादिदेश -सूर्यातपे तण्डुलानन

खगेभ्यो रक्ष |किञ्चित्कालादनन्तरम् एको विचित्र: काक: समुड्डीय

तामुपजगाम् |

पुराने समय में किसी गाँव में एक निर्धन बुढी महिला रहती थी |

उसकी एक बहुत विनम्र तथा सुन्दर पुत्री थी |एक बार उसकी

माता ने थाली में चावल रखकर अपनी पुत्री से कहा -सूर्य की

धूप में चावलों की पक्षियों से रक्षा करो | कुछ समय के बाद

एक अनोखा कौआ उडकर उसके पास आ गया |

नैतादृश: स्वर्णपक्षो रजतचञ्चु: स्वर्णकाकस्तया पूर्वम् दृष्ट: |

तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिकारोदितुमारब्धा |

तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत् -तंडुलान् मा भक्षय |मदीया माता

अतीव निर्धना वर्तते |स्वर्णपक्ष: